

विश्वजनीन धर्मेर प्रकृति ओ आदर्श (Nature and Ideal of Universal Religion):

एटा ऐतिहासिक घटना ये पृथिवीते मानारकमेर धर्मीय अथवा आध्यात्मिक संगठन आहे। तादेर आचार, विश्वास ओ आलादा आलादा। एटो ऐतिहासिक घटना ये वह प्राचीनकाल थेके इतिहास पर्यालोचना करले देखा याय एसब धर्मांज्ळो परम्परा परम्परेऱे संसे झगडा-विवाद करे याचे। अत्येक धर्मीय सम्प्रदायाई एमन दावि करे ये तादेर संगठन ई संकलनेर चेये उत्तम। ताई ताराई पृथिवीते थाकार योग। किंतु असृत यापार एই ये पृथिवीर प्रधान प्रधान धर्मांज्ळलिर मध्ये एतो अकाश्य ओ कृत्यित विरोध थाका संक्षेप संकल धर्मांज्ळलिई बेंचे आहे। धर्मांज्ळलिर एই आउर ओ वाह्य कलह तादेर दूर्बल करार परिवर्ते वरऱ संयुक्त करेहे जीवनीशक्ति एवं तादेर विज्ञार घटानोय साहाय्य करेहे।

ए घटना विवेकानन्देर काछे तांपर्यपूर्ण मने हयेहे। एই घटना एटाई प्रमाण करे ये, एই आपातविरोध कोनभाबेई धर्मांज्ळलिर असूर जीवनीशक्तिके अपवा धर्मेर मूल संस्काके अभावित करे ना। वस्तुतः विवेकानन्द एक-वा शीकार करेहेन ये, विभिन्न धर्मांज्ळलिर मध्ये येमन विरोध आहे, तेमनि अत्येक धर्मांज्ळेर भेत्रेवे सम्प्रदायगत कलह आहे। ए संप्रके तार मत हल, संकलेई यदि एकइभाबे चित्ता करे, ताहले नतुन चित्तार आर कोन अवकाशही थाकवे ना। विभिन्न चित्तार घात-प्रतिघात थेकेई जाग्रत हय आमादेर चित्ताशक्ति। येमन जलेर ढेउ सृष्टि करे जीवनीशक्ति। ढेउहीन जल मृत्युवर। ताई विभिन्नताई जीवनेर लक्षण, धर्मेर मध्येवे विभिन्नता थाकवे।

किंतु अग्न हल, किभाबे एই विभिन्न धर्म सत्ता हते पाऊ? किभाबे विभिन्न विरोधी मतामत एकई समये सत्ता हते पाऊ? एই अस्त्रेर उत्तरेर ओपरैं निर्भर करेहे विश्वजनीन धर्मेर चाग। एकटि विश्वजनीन धर्म यदि प्रकृतै विश्वजनीन हय, तवे सेति पूर्ण करवे असृतः दृष्टि शर्त। प्रथमतः एंटि अवश्याई एव दरजा बोला राखवे संकल विशेव व्यक्तिर जन्य। एटि अवश्याई शीकार करवे ये, कोन व्यक्ति एই अथवा ते विशेव धर्मे जात नय। के कोन धर्म गृहण करवे ना त्याग करवे, सेतो तार निजेर असूरेर निर्बाचनेर ओपर छेडे देवेहा उचित। द्वितीयतः एकटि प्रकृत विश्वजनीन धर्मे संकल धर्मीय सम्प्रदायाहीरै संस्कृति एवं साच्छद्य विधान करू। एकटि विश्वजनीन धर्म परिणामे, संकल सम्प्रदायगत विरोधके अतिक्रम करते समर्थ हय। फले तादेर आहा अर्जनेवे सक्षम हय। ताई एकटि हक्कूत विश्वजनीन धर्मे संकल व्यक्ति विशेव तार आध्यात्मिक मनेर पूष्टि लाभ करू।

अकृतपक्षे कि ए जातीय कोन धर्वेर अस्त्रित पृथिवीते आहे? अथवा ए जातीय कोन धर्म कि हवेहा सप्तव? विवेकानन्द विश्वास करतेन ए जातीय धर्म पृथिवीते अस्तित्वाल रमेहे। धर्मेर एतो वाह्य विरोधे आमरा धर्म संप्लके विरङ्ग इये गजीर दृष्टिते धर्मके देखार शक्ति हारिये फेलेहि फले ए जातीय धर्मेर उपस्थितिके लक्ष्य करते पाराहि ना।

अतोन्त परिष्कारात्मक विवेकानन्द एই विद्याटि ब्याख्या करते हैं। तिनि बताते हैं, श्रुत्यम् विभिन्न धर्मों के अनुत्तिके यदि आमदेव सामान्यात्मक अस्त्रादृष्टि वादायों विशेषण करते, तब देवतों पावो तारा करनहीं एके अपनीर विकल्पाता करते हैं। प्रकृतपक्षे, ताजा एके अपनीर परिपूर्णता का लकड़ा करते हैं। धर्मों संताता एतो सामाजिक उपलक्षित व्ये विभिन्न धर्ममताओं के बीच भवते एक एकटि दिक्कते अथवा कठोरति विके निजेदेव उपलक्षित केवल केवल नियोजित करते हैं। एतावे एक एकटि धर्म आदेव समवतः एक्किके निजेदेव निर्वाचित एकटि दिक्के नियोजित करते तानाह धर्मों आव तोन दिक्क नेह। किञ्च श्रकृतपक्षे, धर्मों एक एकटि दिक्कते विक्षित करते हैं अतोन्त धर्म। सूत्राः अतोन्तकटि धर्महि समृक्ष करते शास्त्रात् धर्मों एक एकटि विवक्ते। इते गावे सम्प्रान्तव्यगत धर्मपलि आशिक दृष्टिकोण थेके शास्त्रात् धर्मके ब्याख्या करते हैं, किञ्च विवेकानन्द विद्यास बहुतेन, मानुष करनव मिथ्या थेके सत्तो उपनीत हते पारे ना, सत्ता थेकेह सत्तो उपनीत हते ह्य। अपेक्षाकृत निष्ठ सत्ता थेके उक्त सत्तो उपनीत ह्य मात्र। त्रितीयस्तः एक्के विवद्यों विक्षित पृष्ठिकोण थाकते पारे। येमन यदि आमरा एक्के वस्त्रर फटोग्राफ निइ विभिन्न द्वेष देके, सेतुलि तिक एक्के इकम हते पारे। एमनकि विग्रीतत वहते पारे। किञ्च फटोग्राफपलि ये एक्के वस्त्रर से विषये सम्बद्ध नेह। सैरेकम आमरा एक्के सत्ताके देवति आमदेव निजेदेव मत करते। निजेर मनेर राते राजिये निजिति। बुधहित निजेर मतो बतते। एव थेकेह मानुषे मानुषे तथाः हते आव आमदेव मने हते एकेवर सत्ते अपनीर विकल्पाता आते। किञ्च मूले सकल धर्म एक्के सत्ताके अकाश करते, ताहि एके अपनीर परिपूरकेह लकड़ा करते हैं।

सूत्राः विश्वजनीन धर्म ऊगते रुप्येहै। येमन रुप्येह मानुषेव मध्ये विश्वात्मद्वयोध। किञ्च विश्वजनीन धर्म यदि थाके तार अकृति केमन? बोन साधारण विद्या कि पाओया याय ममत धर्मों मध्ये? विवेकानन्द अवगत हिलेन एककम कोन 'साधारण विद्या' पाओया शुभै कठिन दाव — आय असञ्चव ब्यापार। विभिन्न धर्म धर्मों विभिन्न ऊप्तेर अति उक्तत दियेहे। येमन इखराये उक्तप गेयेहे विश्वात्मद्वयोध। हिदूधर्मे उक्तप लाभ करते आधारिकता, त्रीष्ठान धर्मे आध उक्ति करते इखरेव राजते अवेष — सूत्राः ए सदेव मध्ये एकटि साधारण दृष्टिभवि खुदे पाओया शुभै कठिन। तबु विवेकानन्द दृष्टि विद्याके एदेव मध्ये सर्वजनीन वले चिह्नित करते हैं। तादेव अथवाति हल 'श्रुत्प' (Acceptance)। एই 'श्रुत्प' शब्दिके तिनि परधर्मसहितुताव कराव शमता हिसावे ग्रहण करते हैं। बराः प्रकृत अथेहि विश्वजनीन धर्म हल सवकिछुके ग्रहण कराव शमता विशेव। एजन्यै तिनि बलेहेन, तिनि इखरेव थेकोन आकृतिके, ये कोन व्यक्तिर वा सम्प्रदायेव मध्ये गूजो करते अस्ति। तिनि तार आर्थना जानानोर जन्य नदिय, चार अथवा मसजिद — ये कोन छाने येते अस्ति। विश्वजनीन धर्मे विद्यासी मानुषके हते ह्ये खोला छद्येव एवं बड़मनेर मानुष। ताके समत धर्मों परित्र ग्रह थेके पाठग्रहण करते ह्ये एवं भविष्य ये सब धर्म आसवे तादेव जन्य छद्याके भूत करते राखते ह्ये।

आव त्रितीय साधारण विद्या विश्वजनीन धर्मे 'इखर'। एक इखरेव धायणा अवलम्बने पृथिवीर यावतीय धर्मसमूह सम्बद्धयुक्त हये आते। विवेकानन्द बलेहेन: 'एक अकृ बलेहेन, 'आमि अनिगनेव मध्ये सूत्रालापे वर्तमान रुप्येहि (मयि सर्वमिदं श्रोतः सूत्रे अनिगना इव)। एই एक एकटि मनिके एक एकटि धर्ममत वा तद्वर्गत सम्प्रदाय विशेव वला येते पारे। पृथक पृथक मनिगलो एই अकार एवं एकटि धर्ममत एवं प्रकृति सूत्रालापे नेहि सकलर मध्ये वर्तमान रुप्येहेन

‘এখন অধিকাংশ মানুষই এই সম্বন্ধে সম্পূর্ণ অজ্ঞ।’

বহুদের মধ্যে একটুই সংষ্ঠির নিয়ম। আমরা সকলেই মানুষ অথচ আমরা সকলেই পরম্পরার পৃথক। মনুষ্যাজ্ঞাতির অংশ হিসেবে আমি এবং আপনি এক। কিন্তু যখন আমি অমূর্খ তখন কিন্তু আমি আপনার থেকে পৃথক। পুরুষ হিসেবে আপনি নারী থেকে ডিম, কিন্তু মানুষ হিসেবে নর ও নারী এক। মানুষ হিসেবে আপনি জীব-জীব থেকে পৃথক, কিন্তু আমি হিসেবে, শ্রী, পুরুষ, জীব-জীব ও উত্তিদ সকলেই সমান। এবং সম্ভা হিসাবে আপনি বিরাট বিশ্বের সঙ্গে এক। আর সেই বিরাট সঙ্গাই দুশ্র, তিনি এই বৈচিত্র্যময় জগৎপঞ্চের চরম একত্ব।’